विषय सूची

भूमिका xix

अध्याय १ कौन हैं बाबाजी? १

अध्याय २ बाबाजी और गोरक्षनाथ एक ही हैं ८

अध्याय ३ संत जो बाबाजी नहीं हैं १२

अध्याय ४ अनादि अनंत बाबाजी के साथ मेरी प्रथम भेंट १९

अध्याय ५ बाबाजी के साथ मेरे बचपन का संबंध ४१

अध्याय ६ बाबाजी – पुरातन उत्पत्तियाँ ४६

अध्याय ७ बाबाजी का शिष्य होने के नाते ५७

अध्याय ८ रुद्रप्रयाग का अनुभव ६६

अध्याय ९ बाबाजी और माताजी ७४

अध्याय १० बाबाजी के द्वारा अवतारों की दीक्षा ८०

अध्याय ११ कल्कि अवतार और बाबाजी महावतार १०८

अध्याय १२ वास्तविक क्रियायोग १२०

अध्याय १३ *गोरक्ष शतक* १३७

अध्याय १४ दिव्य रसायनविद १६२

परिशिष्ट १७५

शब्द संग्रह १८२

तथ्य बनता इतिहास
इतिहास बन जाता किंवदंती
किंवदंती बनता मिथक
और मिथक अनुभव में आते ही बन जाता है तथ्य।
यही है कालचक्र का सत्य।

योगिराज सिद्धनाथ

योगिराज सिद्धनाथ को हुए शिवगोरक्ष बाबाजी के वास्तविक अनुभव के दर्शनों की एक छाया।

भूमिका

इस विशेष संक्षिप्त संस्करण को बनाने का उद्देश्य, भारतवर्ष की आध्यात्मिक संस्कृति को सरलीकृत एवं समुचित तरीके से स्पष्ट करना है ताकि यह सर्वसामान्य के पठन हेतु बन सके। विश्वास है कि बाबाजी और महान सतगुरुओं की कृपा से यह पुस्तक दुनिया भर के सत्यान्वेषियों को उपलब्ध होगी।

सांसारिक जन्म मरण से परे, शिवगोरक्ष बाबाजी परमशिव की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति हैं। वे आज भी जीवित हैं और उनकी अनश्वर उपस्थिति आज भी हिमालय की श्रृंखलाओं को पावन कर रही है! वैदिक और पौराणिक युगों से लेकर आधुनिक समय तक उनके विषय में पूर्ण प्रमाणीकृत सन्दर्भ भारतीय शास्त्रों में सर्वत्र मौज़ूद हैं। यहीं हैं वे सच्चे बाबाजी जिनका मैंने व्यक्तिगत तौर पर अनुभव किया है और जिनका उल्लेख अपनी पुस्तकों और मौखिक प्रवचनों में किया है।

उनकी किंवदंतियां समूचे भारतवर्ष में व्याप्त हैं। उन्हें महावतार बाबाजी के नाम से भी जाना जाता है और वे अनंत ज्ञान के प्रकाशमान शीश, सुगन्धित हृदय और अमर आत्मा हैं। उन्हें पुरातन से भी प्राचीन कहा जाता है और वे महान बरगद के वृक्ष स्वरुप हैं, जिनसे समस्त अवतारों, संतों और दिव्य अवतरणों की शाखाएँ प्रस्फुटित हुई हैं। यहाँ तक कि देवता और दिव्य लोक के वासी भी उनकी सतत आराधना करते हैं और उनसे जगत को बंधनों और दुखों से मुक्त करने हेतु प्रार्थना करते हैं। बाबाजी ने ही आधुनिक युग को क्रियायोग के आत्ममोक्ष के विज्ञान से प्रबुद्ध किया है।

अध्याय १

बाबाजी कौन हैं?

दुनिया भर के जिज्ञासुओं के साथ हुए मेरे संवाद और वार्तालाप से मुझे इस बात का पता चला कि उस महान सत्ता, जिन्हें बाबाजी कहते हैं, के बारे में किस कदर भ्रम की स्थिति बनी हुई है। अतः, समस्त संदेहों और उलझनों को विराम देने के लिए, मैंने अपने अनुभव और उससे प्राप्त ज्ञान के आधार पर, इस किताब में इस बात का खुलासा किया है कि सच्चे बाबाजी कौन हैं।

अपनी शैशवावस्था एवं किशोरावस्था से लेकर बाद के वर्षों तक, मैंने सदा ही उन्हें अपने मार्गदर्शक के रूप में देखा और महसूस किया है, मानो वे मुझे १९६७ में हिमालय के बद्रीनाथ में किसी महान अनुभव के लिए तैयार कर रहे थे, जब मैं महज़ २३ बरस का एक युवा था।

अपने शिष्य योगावतार लाहिड़ी महाशय के द्वारा, बाबाजी ने आधुनिक जगत को वास्तविक क्रियायोग[१] से प्रबुद्ध किया, जिन्हें स्वयं उन्होंने ही १८६१ में इस आत्मविद्या में दीक्षित किया। जब परमहंस[२] योगानंद ने १९४६ में अपनी कालजयी रचना, 'एक योगी की आत्मकथा' को प्रकाशित किया, तब पहली बार महावतार बाबाजी के विषय में बड़े पैमाने पर लोगों को पता चला।

---

१ "क्रिया का योग" एक ऐसा प्रकाशमान योग पथ जो आपको अकर्म के पथ पर ले आता है। जिसे बाबाजी गोरक्षनाथ ने कर्मों के विघटन और मनुष्य के दिव्यता की ओर उत्थान के लिए प्रदान किया है।

२ "परमहंस", किसी योगी की चौथे स्तर की दीक्षा, एक माननीय उपाधि जो रामकृष्ण और योगानंद जैसे महान सिद्धों को दी जाती है।

यही है वो परंपरा या महान वंशावली जिससे मैं सम्बन्धित हूँ और जिसके द्वारा मैं संसार को क्रियायोग के इस पवित्र विज्ञान को प्रदान करने का अधिकारी हुआ हूँ।

मनुष्य जाति के मोक्ष और उस पर अनुग्रह करने लिए सभी प्रकार के योग, यथा राजयोग, क्रियायोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग, कर्मयोग, हठयोग, लययोग, तंत्रयोग और हंसयोग एक ही स्रोत से उद्भूत हुए हैं, जो प्रकट-अप्रकट हो समस्त प्राणियों की रक्षा करते हैं और जिन्हें बाबाजी के नाम से जाना जाता है।

भविष्य में "स्वशान्ति से जगतशान्ति" की उपलब्धि, संयुक्त राष्ट्र और उसके संगठनों से बढ़कर संयुक्त मनः संगठन के द्वारा ज़्यादा आसानी से घटित हो सकेगी। और ऐसा क्रियायोग के अद्वितीय विज्ञान के अभ्यास द्वारा संभव है जो जगतशांति और आत्मज्ञान की ओर ले जाने वाला एक गैर सांप्रदायिक एवं गैर धार्मिक पथ है।

मनुष्य जाति की धारा और उसके उत्थान को सही क्रियायोग के अभ्यास की ओर प्रवाहमान बनाया जा सकता है और यह जाना जा सकता है कि शिवगोरक्ष बाबाजी और परमहंस योगानंद कृत 'एक योगी की आत्मकथा' पुस्तक वाले बाबाजी, एक ही हैं। पाठकों के द्वारा इस पुस्तक को समझ लेने से यह उद्देश्य पूरा हो सकता है। मेरा इस पुस्तक को लिखने के पीछे मुख्य विषयवस्तु और आध्यात्मिक उद्देश्य निम्नलिखित हैं।

१. संसार के सामने से इस महान रहस्य से पर्दा हटाना कि शिवगोरक्ष बाबाजी, 'एक योगी की आत्मकथा' पुस्तक वाले बाबाजी ही हैं। अन्य सभी लोगों का लेखन, स्थान और बातें सहायक हैं और उनका उपयोग उपरोक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतु ही किया जाना चाहिए। यह पुस्तक, योगावतार लाहिड़ी महाशय, ज्ञानावतार श्री युक्तेश्वर या परमहंस योगानंद के विषय में नहीं है। अतः जब मैं योगानंद के विषय में कोई अध्याय लिखता हूँ तब वह अध्याय महज़ एक सुविधा है जिसका सन्दर्भ यह प्रमाणित करने के लिए है कि बाबाजी और शिवगोरक्ष बाबाजी (गोरक्षनाथ या गोरखनाथ) एक ही हैं।

२. दूसरा महत्वपूर्ण कारण और अत्यावश्यक बात जिसे दिग्भ्रमित जनता को स्पष्ट करना है वो यह है कि गोरक्ष शतक और महावतार बाबाजी द्वारा लाहिड़ी महाशय को प्रदत्त क्रियायोग भी एक ही है। मेरा उद्देश्य यह साबित करना है कि बाबाजी के क्रियायोग के मूल स्रोत गोरक्ष शतक[३] और मनुस्मृति[४] हैं। यह न सिर्फ यह स्पष्ट करता है कि गोरक्ष शतक और क्रियायोग एक ही हैं बल्कि आगे चलकर इस बात की भी पुष्टि करता है कि बाबाजी और गोरक्षनाथ दोनों एक ही हस्ती के दो नाम हैं।

मध्ययुगीन काल में अनश्वर बाबाजी, अक्षय गोरक्षनाथ के रूप में प्रकट हुए। अतः दोनों एक ही हैं जिन्होंने मुझे शिवगोरक्ष बाबाजी के रूप में दर्शन दिए।

बहुतेरे लोग बाबाजी और गोरक्षनाथ के बारे में बातें करते हैं और दोनों के बीच एक महान भ्रम की स्थिति बन जाती है क्योंकि कुछ लोग उनके लौकिक आयाम के बारे में बात करते हैं, तो दूसरे दिव्य आयाम के विषय में, तो कुछ ऐसे भी हैं जो उनके ब्रह्माण्ड स्वरूपी आयाम को बतलाते हैं। कुछ लेखक उनकी चेतन अवस्था के विषय में बताते हैं, तो कुछ उनकी अतिचेतन अवस्था के विषय में, और कुछ उनकी परम चेतन अवस्था के विषय में बताने का प्रयास करते हैं। अतः जबकि यह सत्ता पृथक नहीं है, हर एक लेखक उनके विषय में अपनी सीमित समझ के द्वारा ही बता पाता है और तथ्य यह है कि कोई भी पूर्णरूपेण तौर पर उन्हें समझ नहीं सकता। अतः यह तो बस उनकी कृपा ही है कि कोई यह या कोई और पुस्तक लिख पा रहा है।

मैंने इस पुस्तक की मूल प्रति के अध्याय १९ ('हर युग के संत') के एक भाग 'बाबाजी के स्वप्न शरीर' में इस बात को यथासंभव स्पष्ट करने का प्रयास किया है। हम सभी पृथ्वी पर बाबाजी के सीमित रूप

---

३ गोरक्ष शतक, शिव गोरक्ष बाबाजी द्वारा रचित गोरक्ष पद्धति का पहला भाग है। गोरक्ष पद्धति, आत्मज्ञान के लिए प्रयुक्त की गई योग विधियों की एक प्रणाली है।

४ मनुस्मृति (जिसे मानव धर्म शास्त्र भी कहते हैं) की रचना मनु ने की थी, जिन्हें मानवजाति का पहला न्याय प्रदाता माना जाता है। इस ग्रन्थ में मानवता और उसकी उन्नति के नैतिक एवं आध्यात्मिक नियमों के संकेत दिए गए हैं।

को जानते हैं परन्तु उनकी शाश्वत सत्ता को समझ पाना असंभव है, जो सापेक्षता और सर्जन से बिलकुल परे है। यह पुस्तक मुख्य रूप से सापेक्षता और सृजनात्मकता में बाबाजी के लौकिक एवं दिव्य रूप को बतलाती है।

कुछ असत्य बातों की जांच परख

मैंने, कबीर[५], गुरु नानक[६], आलम प्रभु[७] और बालक नाथ[८] से सम्बन्धित भिन्न भिन्न सम्प्रदायों के धर्मों, पंथों और मतों की अनेक पुस्तकों का अध्ययन किया। अपने सतगुरु को सर्वोत्तम और दूसरों से सबसे बेहतर साबित करने की कोशिश में, इन संतों और आध्यात्मिक सतगुरुओं के भक्तों एवं शिष्यों ने लगभग इन सभी सतगुरुओं का महानतम संत – शिवगोरक्ष बाबाजी के साथ शारीरिक या दार्शनिक संघर्ष करवाया है।

उनका ऐसा सोचना था कि जब तक उनके सतगुरु, गोरक्षनाथ को दार्शनिक वाद विवाद या सिद्धियों[९] के प्रदर्शन में परास्त न कर दें, तब तक एक महान संत और अवतार[१०] के रूप में उन्हें समाज में ऊंचा दर्जा प्राप्त नहीं हो सकता। अतः कहना चाहिए कि गोरक्षनाथ, इस परीक्षण के सर्वोत्तम लक्ष्य बन गए जिसके बिना जनसाधारण में किसी

---

५ कबीर भारत के एक मध्ययुगीन संत थे जिन्हें बाबाजी से क्रियायोग की दीक्षा मिली थी। उन्होंने अपने गुरु रामानन्द से 'राम' का मन्त्र भी प्राप्त किया था।

६ गुरु नानक एक दूसरे महान मध्ययुगीन संत एवं सिख धर्म के प्रणेता थे। उन्होंने सिख ग्रन्थ, जपजी गुटका में बाबाजी गोरक्ष नाथ के सम्मान में छन्द गाए हैं।

७ आलम प्रभु एक ऐसे संत थे जो बाबाजी गोरक्ष नाथ के १५० वर्ष पश्चात इस पृथ्वी पर आये। एक रात्रि बाबाजी ने उन्हें दर्शन दिए और अपना आशीर्वाद प्रदान किया। इन गुरुओं की लौकिक भेंट का कोई ऐतिहासिक साक्ष्य उपलब्ध नहीं है।

८ मध्य युग के दौरान, बाबा बालक नाथ और नाथ परंपरा का अनुसरण करने वाले हजारों योगी, बाबाजी गोरक्ष नाथ के शिष्य थे।

९ 'पूर्णता की प्राप्ति', आध्यात्मिक पूर्णता, परम सत्य (आत्मा या ब्रह्म) के साथ पूर्ण एकत्व की प्राप्ति, असाधारण गुणोत्कर्ष, जिसके योग परंपरा में बहुतेरे प्रकार हैं।

१० 'नीचे आना', आध्यात्मिक कार्य एवं संसार की मुक्ति हेतु, दिव्यता का भौतिक प्रकाश देह में नीचे उतर आना, बाह्य रूप में कुछ विशिष्ट चिन्हों द्वारा पहचान में आता है, जैसे बहुत से मौकों पर अवतार के शरीर की कोई छाया नहीं पायी जाती।

भी संत को संत का दर्जा नहीं मिल सकता था।

इस बात ने उन कट्टर शिष्यों के मन में मनोवैज्ञानिक मतभेद पैदा कर दिया और उन्होंने गलत कहानियां गढ़नी शुरू कर दीं जिनमें गोरक्षनाथ दार्शनिक वाद विवाद या सिद्धियों के युद्ध में पराजित हुए, जबकि उनके सतगुरुओं और गोरक्षनाथ के बीच १५० से ३०० साल का अंतर था। अपने सतगुरुओं के जीवनकाल और युग के प्रति बेहद कम सम्मान रखते हुए, वे अपने सतगुरुओं को महानतम साबित करने में इस कदर डूब गए कि अपनी सारी सीमाएँ लांघते हुए उन्होंने अपने धार्मिक ग्रंथों एवं शास्त्रों में गलत जानकारियां भर दीं।

इस प्रकरण में तथ्य यह है कि मध्ययुगीन काल के ऐतिहासिक शिवगोरक्ष बाबाजी भी आलम प्रभु, बालक नाथ और गुरु नानक के काल से लगभग १५० से ३०० साल पहले के हैं। सच्चाई तो यह है कि हर युग के संत, गोरक्षनाथ ही थे जिन्होंने भगवान भर्तृहरि नाथ, कबीर, और गुरु नानक की समस्त कविताओं और रचनाओं को प्रभावित किया और उन्हें प्रेरणा प्रदान की। इन अवतारी और अत्यंत महान सतगुरुओं का अपने परमगुरु गोरक्षनाथ को परास्त करने की गलत कहानियाँ गढ़ने में कोई हाथ नहीं था। उन्हें ऐसे पराक्रम की कोई आवश्यकता भी नहीं थी।

अतः यदि कोई ऐसी पुस्तक पढ़े जो एक ईर्ष्यालु नज़रिया या किसी संप्रदाय विशेष की तरफ़ झुकाव रखती हो, तब उसे इन सभी गुरुओं के महान गुरु के विषय में फैलाई गयी झूठी बातों से गुमराह होने के प्रति सावधान होना होगा, जिनकी उपस्थिति आज भी हिमालय पर्वतों को पावन कर रही है। उन्होंने भारतवर्ष की भूमि की आध्यात्मिक धरोहर को संभाल कर रखा हुआ है। कबीर ने गोरक्षनाथ के दर्शन का पुरुषत्व गाया है और महान महिला संत मीरा ने गोरक्षनाथ के भक्तिपूर्ण हृदय को गाया है। इतना होने पर भी यह दोनों महान संत, शिवगोरक्ष बाबाजी के दर्शन और उनकी सच्ची व्याख्या कर पाने में असमर्थ रहे। परन्तु यदि गोरक्षनाथ को थोड़ा सा भी हिलना पड़े और अपना स्थान बदलना पड़े तब भारतीय दर्शन और योग का यह भवन, वैसे ही हिलने लगेगा मानो रिक्टर स्केल पर ६.६ का भूकम्प आ गया हो। अपने बचाव

में कभी कुछ भी न कहने वाले, सभी युगों में रहने वाले इस संत के आशीर्वाद ने दुनिया भर के योग, दर्शनों और धर्मों में निहित सत्य को सतत संभाल कर रखा हुआ है।

बाबाजी की खोज

आप जितना बाबाजी को जानने लगते हैं, बाबाजी आप में उतने ही अभिव्यक्त हो जाते हैं लेकिन बहुत कम लोग ही ऐसे हैं जो बाबाजी के सच्चे स्वरुप को जानते हैं। यह किसी सत्पथ पर चलने वाले साधक को हतोत्साहित करने के लिए नहीं कहा गया बल्कि यह तो किसी अहंकारी साधक के लिए है जो कल्पना कर बैठा है कि वह सर्वस्वरूपेण बाबाजी के विषय में सब कुछ जानता है और उसे बाबाजी की हर विशिष्टता का ज्ञान है। खतरा इस भ्रमपूर्ण बात को मान लेने में है कि हम बाबाजी से मिल चुके हैं और इस बात की सत्यता कोई और नहीं वरन वह व्यक्ति ही जानता है जिसने ऐसा होने का दावा किया है। उसे अपने प्रति सच्चा होना होगा कि किस हद तक उसने बाबाजी के दर्शन किये हैं या उन्हें देखा है। उसने बाबाजी को किसी चिड़िया के चहचहाने के द्वारा अनुभूत किया हो या हलकी ठंडी हवा के झोंके के रूप में, उन्हें स्वप्न में देखा हो या किसी दृष्टांत में, या फिर उनका साक्षात्कार किया हो, अर्थात उन्हें सत् के रूप में अनुभव किया, उनके चिद् स्वरुप को जाना और उन्हें आनंद रूप में महसूस किया, या उन्हें ब्रह्मनिर्वाण की सर्वोच्च अवस्था में अनुभव किया जिसे "शून्य-अशून्य का है-पन"[११] कहते हैं; हममें से कितने ऐसे हैं जिन्होंने उन्हें "अस्तित्वविहीन परमअस्तित्व"[१२] जाना और उनके साथ एक हो गए?

---

११ योगीराज सिद्धनाथ के द्वारा परिभाषित शब्दावली। शून्य प्रतीक है ब्रह्माण्ड की शून्यता का। शून्य अशून्य, ब्रह्माण्ड के सब कुछ का प्रतीक है और 'है-पन' उनमे व्याप्त है और इन दोनों अवस्थाओं से परे स्थित है।

१२ योगिराज सिद्धनाथ के द्वारा दिया गया मुहावरा, यह शब्द एक विरोधाभास का प्रतीक है क्योंकि जहाँ तक हमारे अस्तित्व का प्रश्न है, परब्रह्म, नश्वर विचार के इस कदर परे है कि वह कुछ भी नहीं है। और फिर भी वह हमारे आत्मतत्व और सकल ब्रह्माण्ड का अत्यावश्यक अंग है।

आध्यात्मिक चेतना के विविध स्तरों का अनुभव करते हुए साधक को स्वयं के प्रति सच्चा होना होगा। मैं यहाँ इस बात का फैसला करने के लिए नहीं बैठा हूँ कि क्या सही है और क्या गलत। अपनी बात कहूँ तो मैं बस इतना जानता हूँ कि मैं सेवा और मार्गदर्शन करने के लिए प्रेरित हुआ हूँ। मेरी कलम सिर्फ इसलिए लिख रही क्योंकि वे चाहते हैं कि यह लिखे। शायद इस पुस्तक का उद्देश्य हमारे अहं को काबू में रखना है और हम सभी को अपने भीतर पूरी विनम्रता के साथ यह समझने योग्य बनाना है कि हमारा स्तर कहाँ है और महान सत्ता "बाबाजी" का स्तर कहाँ है।

स्मरण रहे कि युगों युगों में जीवित रहने वाले महान संत मानवजाति के हृदय और मन को पढ़ सकते हैं। वे अच्छे तौर पर यह जानते हैं कि हर एक व्यक्ति अपने व्यक्तिगत आत्मोत्थान के किस क्रम पर खड़ा है और ईश्वर के प्रति उसकी भक्ति में कितनी गहराई है।